इन्टरनेशनल सोसायटी फॉर कृष्णा कांश्येसनेस द्वारा आयोजित "व्यसन मुक्ति और मूल्य सशक्तिकरण" सेमिनार में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (दिनांक : १४ नवम्बर, २०१७)

- इन्टरनेशनल सोसायटी फॉर कृष्णा कांश्येसनेस द्वारा आयोजित व्यसन मुक्ति और मूल्य सशक्तिकरण के विषय पर आयोजित आज का सेमिनार बहुत ही महत्वपूर्ण है। आज कॉलेजों में, विश्वविद्यालयों में तथा स्कूलों में सभी जगह युवा वर्ग में व्यसन की प्रवृत्ति बढ़ गई है। यह बात सामाजिक चिंता का विषय है।
- हम मूल्य किसे कहते है ? इसकी सीधी सी परिभाषा यह है कि जो जीवन को मूल्यवान बनाता है तथा जिससे जीवन सार्थक बनता है वही मूल्यवान है।
- रामचरित मानस में तुलसीदासजी ने एक प्रसंग की बात की है। राजा दशरथ ने महाराणी कैकेई को किसी अवसर पर दो वचन दे दिये थे और कैकेई ने बड़े विचित्र समय पर महाराजा दशरथ से वो दो वचन मांग लिये। राजा दशरथ के सामने एक रास्ता ये भी हो सकता था कि वे वचन पालन से इन्कार कर देते। हम लोग दिन में कितनी बार वचन भंग करते है क्योंकि हमारे लिये हमारे वचन का कोई मूल्य ही नहीं। तुलसीदासजी राम चरितमानस में कहते हैं कि पूरे रघुवंश में यह परंपरा चली आई है कि प्राण भले ही जायें पर वचन का पालन अवश्य होना चाहिये। यह कमिटमेंट की बात है। प्राण गँवाना पड़े तो भले मगर वचन का पालन होना चाहिये क्योंकि वचन मूल्यवान है।
- आज के युग में सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है की हम युवापीढ़ी में मूल्यों की भावना विकसित करें। यह काम मुख्यत: तो परिवार का है मगर आज के संदर्भ में परिवार नाम की संस्था क्षीण होती जा रही है। घर में चार सदस्य भले ही है मगर सब अपने-अपने कमरे में जी रहे है। कहने को तो एक घर में सभी रहते हैं लेकिन घर के सभी सदस्य अलग-अलग कमरे में अपना जीवन व्यतीत

कर रहे हैं। ये अकेलापन या अलगाव हमारे आज के ज़माने की देन हैं जिसे हम आधुनिकता कहते है। आधुनिकता के नाम पर ये जो अकेलापन है, उसे दूर करने के लिये हम व्यसनों की तरफ जाते हैं। व्यसनों से दूर रहने का एक मात्र उपाय परिवार की संस्था को मजबूत करना है। सोचने की बात यह है कि क्या परिवार नाम की संस्था को हम मजबूत कर सकते है ? यदि यह संभव हुआ तो अकेलापन कटेगा और व्यसन से छुटकारा मिलेगा। परिवार को सशक्त बनाने की एक बहुत बड़ी चुनौती आज हमारे सामने हैं।

- दूसरा माध्यम है शिक्षा का। आज हम मानते हैं कि हमारी यूनिवर्सिटियों में और कॉलेजों में व्यसन मुक्ति के अभियान चलाये जा रहे है। एन. सी. सी. के अधिकारी भी इस काम को लेकर बहुत उत्साह से युवाओं में चेतना संचार का काम कर रहे हैं। अब सवाल यह है कि क्या सचमुच हमारी शिक्षा पद्धति ऐसी शिक्षा दे रही है, जिससे हमारे युवा मूल्य संपन्न बनें। हमें तो यह लगता है कि हमारी शिक्षा हमे गलत दिशा में ले जा रही है। यदि हम चाहते है कि हमारी शिक्षा हमारे युवाओं के जीवन में मूल्य प्रदान करे तो हमें शिक्षा में बदलाव लाना पड़ेगा।
- आज हमारे विश्वविद्यालय में कोन्वोकेशन होते हैं। चान्सेलर होने के नाते मुझे भी भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों में कोन्वोकेशन के अवसर पर जाना पड़ता हैं। वहाँ भाषण में छात्रों को बड़ी-बड़ी बातें बताई जाती हैं। लेकिन हमारे देश में प्राचीन काल में जब कोन्वोकेशन होते थे तब आचार्य दीक्षित होनेवाले छात्रों को उपदेश देते थे "सत्यम वद" यानि की "सत्य बोलो"। तात्पर्य यह है की हमारे सामने दो रास्ते हैं सत्य का और असत्य का। असत्य के रास्ते पर चलना सरल है और सत्य के रास्ते पर चलना मुश्किल है। इसका मतलब यह हुआ कि आचार्य अपने छात्रों को पूछते थे कि कौन सा मार्ग चुनोंगे, सत्य का या असत्य का।

- इसके आगे जाकर प्राचीन काल के आचार्य कहते थे कि "धर्मम चर" यानि की "धर्म का आचरण करो।" जीवन के जितने भी मूल्य है उन सभी मूल्यों का समावेश धर्म में हो जाता है। आचार्य धर्म के आचरण की बात करते थे।
- आज के समय में समाज को यदि सही अर्थ में शिक्षा देकर मानसिक क्रांति की तरफ ले जाने का काम यदि कोई अच्छे ढ़ंग से कर सकता है तो वह है हमारी इस्कॉन जैसी धार्मिक संस्था। हमारे युवाओं को मानसिक क्रांति की ओर हमारे धार्मिक संस्थान ही ले जा सकते है। मानसिकता बदलने का काम यह संस्थान कर रहे हैं। गुजरात में मैं आया तो यहाँ मुझे पूज्य मोरारी बापू तथा श्री भाईश्री रमेशभाई ओझा जी के प्रवचन सुनने के अवसर मिले। उनके प्रवचन सुनने के बाद ही मुझे लगा कि सच्ची शिक्षा तो यहाँ से प्राप्त होती है। हमारे धर्माचार्य धर्म का शिक्षण करके हमारे युवाओं की मानसिकता में परिवर्तन लाकर उन्हें आध्यात्मिक जीवन जीने के लिये प्रेरित कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो हमारे परिवार, शिक्षा तथा हमारे धर्माचार्य ये सब मिलकर हमारे युवाओं को व्यसन मुक्ति की तरफ बहुत ही प्रभावी तरीके से ले जा सकते है।
- क्या हम हमारे युवाओं को विवेक के बल पर सही मार्ग पर ला सकते है ? व्यसन में ग्रस्त तथा भटके हुये युवाओं में क्या हम विवेक जगाने का भी काम करेंगे जिसके बल पर वे भटके हुये मार्ग से वापस आ सके, इस विषय पर हमें मंथन करने की जरूरत है।
- आज पूरे विश्व में इस्कॉन मूवमेंट का बड़ा प्रभाव है। ईश्वर की भक्ति में मस्त इस्कॉन के अनुयायी जब नाचते हुये भगवान की भक्ति में बह जाते हैं तो मन स्वस्थ हो जाता है। इस प्रकार की मूवमेंट में हमें भागीदारी करनी चाहिये। मैं मानता हूँ कि व्यसनमुक्ति में इस्कॉन मूवमेंट भी बहुत बड़ा योगदान दे सकती है तथा युवाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकती है।

- यदि हमारे धार्मिक संस्थान हमारे युवाओं को मूल्यों की शिक्षा देने का उत्तरदायित्व संभाल लेते है तो हमारे देश की एक बहुत बड़ी ताकत को सही मार्ग पर ला सकते हैं। हमें हमारे युवाओं को नकारात्मक दिशा में बढ़ने से रोकना पड़ेगा तथा रचनात्मक कार्य में उनको जोड़ना पड़ेगा। अगर यह काम हो सकता है और यदि हमारी युवाशक्ति को खराब मार्ग पर भटकने से रोका जा सकता है, तो यह एक बहुत बड़ी राष्ट्र सेवा कही जायेगी।
- हमारे प्रधानमंत्रीजी कहते है कि हमें नये भारत का निर्माण करना है। अब नये भारत में हमारे युवा क्या योगदान करेंगे, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम कैसे युवाओं को तैयार करते हैं। आज के कार्यक्रम का यदि कोई संदेश हो सकता है, तो वह यह है कि हम अपने युवाओं को सकारात्मक मार्ग पर चलने के लिये प्रोत्साहित करने के सभी संभव प्रयास करें।

  मैं इस्कॉन संस्थान का बहुत बड़ा आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे आज के इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया और व्यसन मुक्ति और मूल्य सशक्तिकरण के विषय पर मुझे अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर दिया। धन्यवाद, जय हिन्द।